(पहाड़ी कोठार से)

जाईबोने

(गालो लोक-कथा)

गुमजुम लोई

अरुणाचल प्रदेश पूर्वोत्तर भारत का एक छोटा-सा राज्य है। यहाँ लगभग छब्बीस जनजातियाँ और सौ से भी अधिक उप-जनजातियाँ निवास करती हैं। इन छब्बीस जनजातियों में 'गालो' एक प्रमुख जनजाति है। प्रत्येक जनजाति और उप-जनजातियों की अपनी-अपनी लोक मान्यताएँ तथा दिलचस्प लोक कथाएँ होती हैं। 'जाइबोने' भी गालो जनजाति की एक बहुत ही प्रसिद्ध और दिलचस्प लोक कथा है। दादा-दादी, नाना-नानी की कहानियों में यह आज भी जीवित है। 'जाईबोने' की कथा मूलत: जाईबोने, दिदुकुब और बिरतापू पर आधारित कथा है।

न्यीदो गे दोदि, दोदि गे दिदुकुब अर्थात न्यीदो का बेटा दोदि और दोदि का बेटा दिदुकुब है। (गालो जनजाति में बच्चों का नाम पिता के नाम के आखिरी अक्षर से रखे जाने का रिवाज़ है।) इसी तरह हिजा गे जाईबोने अर्थात हिजा की बेटी जाईबोने। दिदुकुब के मन में जाईबोने से विवाह करने की इच्छा पनप उठी और उसने एक दिन जाईबोने के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। विवाह प्रस्ताव की स्वीकृति के पश्चात नियमानुसार दिदुकुब की तरफ से आसीन-ओपो अर्थात तरह-तरह के व्यंजन और चावल की शराब, आदिन-मेन अर्थात मीट-मच्छली आदि जाईबोने के घर पहुंचा दिया जाता है। दूसरी ओर बिरतापू है जो जल में रहने वाला एक जीव है, जिसका शरीर जलहस्ती की तरह होता है। वह भी मन-ही-मन जाईबोने से विवाह करना चाहता है। जब दिदुकुब के साथ जाईबोने की रिश्ते की बात सुनता है तो वह (बिरतापू) विचलित हो जाता और सोचने लगता है कि किस प्रकार इन दोनों के रिश्ते को तोड़ा जाए? और जाईबोने को कैसे हासिल किया जाए? जाईबोने को पाने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार था, इसके लिए बिरतापू कई तरकीबे सोचने लगता है। मौका पाते ही एक दिन बिरतापू जाईबोने से कहता है- जाईबोने! दिदुकुब ने जो मीट तुम्हारे घर पहुंचाया है वह जंगली जानवरों का मीट है। जो पुराना हो चुका है, जिसे चबाते-चबाते तुम्हारे जबड़ों में दर्द होने लगेगा। तुम मुझसे विवाह कर लो मैं तुम्हें रोज़ नरम-नरम और स्वादिष्ट मछलियां खिलाता रहूँगा। इस प्रकार बिरतापू दिदुकुब की छोटी-छोटी बातों में कई बुराइयां निकालता है और उसे नीचा दिखाने की कोशिश करता है। इस षडयंत्र के फलस्वरूप बिरतापू जाईबोन को अपना बनाने में कामयाब हो जाता है और उसे लेकर वापस अपने घर (नदी की गहराइयों में) लौट जाता है। (जाईबोने हिजा की बेटी है, इसलिए वह पानी में भी जीवित रह सकती है।) यहाँ दिदुकुब परेशान होकर जाईबोने को खोजने लगता है और जब दिदुकुब को इस बात का पता चलता है कि वह उसे हमेशा के लिए छोड़ कर चली गयी है, तब दिदुकुब बहुत दु:खी हो जाता हैं। सोचता है कि मैं चाह कर भी नदी की गहराइयों में जाकर जाईबोने को वापस नहीं ला सकता (दिदुकुब एक साधारण जीव है जो जल में नहीं रह सकता है।) और न ही अपने इस अपमान को भूल सकता हूँ। अब दिदुकुब भी मन ही मन जाईबोने और बिरतापू से बदला लेने के बारे में सोचने लगता है और उन दोनों को मारने के लिये तरह-तरह की तरकीबें अपनाता है।

वह जंगल जाकर ताम (एक प्रकार का जहरीला फल और पेड़ की छाल) लेकर आता है और उसे पीस-पीस कर नदी में डालता है ताकि उसकी जलन एवं जहर से दोनों (जाईबोने और बिरतापू) मर जाएँ, कभी-कभी आम्प-मिपो अर्थात भूसी या चावल के छिलकों को जलाकर तो कभी यालुक-बाक अर्थात मिर्ची और कड़वा बैगन को पीस कर नदी मे बहा देता है, पर दिदुकुब की ये सारी कोशिशें बेकार पड़ जाती हैं। इन जहरीली चीज़ों से मरने के बजाय उल्टा मछलियाँ इन्हें खा जाया करती जिसे देख दिदुकुब बदले की आग में और अधिक जलने लगा और सोचने लगा– अब क्या किया जाए? किस प्रकार इन दोनों को सबक सिखाया जाए? अंतत: दिदुकुब फैसला करता है कि अब की बार घने जंगलों में जाकर इससे भी जहरीले फल की तलाश करेगा और वह निकल पड़ता है।

इस तरह वह कई दिनों की यात्रा के बाद बहुत दूर आने-मोऊ-मोमेन, अर्थात पहाड़ी खेतों के मार्ग से होते हुए गित कोन-दिर मोरो (यानी ऐसा घना वन जहां बहुत मुश्किलों के बाद ही कोई पहुँच पाता है) पहुँच जाता है। यहाँ पहुँच कर दिदुकुब को एक होइन या इंबलरो (जंगली जानवर) मिलता है। वह होइन बहुत ही दुबला-पतला होता है जिसे देख दिदुकुब हैरान रह जाता है और उससे पूछता है- अरे! होइन तुम इतने दुबले-पतले क्यों हो? इसका क्या कारण है? इसे सुन होइन कहता है- हीदिक गे कोसे, दोदिक गे कोसे (ऐसे स्थल जहां ताम मिलता है) नामक स्थल पर दोका गासे-मुर गासे (ताम अर्थात एक जंगली फल) के गुच्छों से लदा हुआ एक पेड़ है जो बहुत जहरीला होने के साथ-साथ बहुत स्वादिष्ट दिखता है जिसका मैंने एक ही फल चखा और मेरा यह हाल हो गया। (इस फल के बारे में ऐसा कहा जाता है कि एक फल चखने पर एक साल, दो फल चखने पर दो साल इस तरह जितना फल चखोगे उसके जहर का असर उतने सालों तक रहेगा और इसका अत्यधिक उपयोग जानलेवा होता है।) इसे सुनते ही दिदुकुब खुशी के मारे उछल पड़ा और कहने लगा- आहा! मैं कई दिनों से ऐसे ही जहरीले फल की तलाश में भटक रहा हूँ। अब मैं तुम्हारे बताए जगह पर जा करके उन फलों को तोड़ लेता हूँ परंतु जाने से पहले मैं तुम्हारे (होइन) लिए कुछ खाने की चीज़ों का नाम बताता हूँ जिसे खाकर तुम तंदुरुस्त हो जाओगे। फिर दिदुकुब होइन को कोलु-कोदुम (जंगली केले), बेब-बेलाक (जंगली मीठे फल) के नाम बताता है। (ऐसा माना जाता है कि दिदुकुब के बताने के बाद से लेकर आज तक होइन इन्हीं चीज़ों को खाता है और तंदुरुस्त रहता है।) फिर दिदुकुब खुशी-खुशी ताम तोड़ने के लिए निकल पड़ता है। कुछ दिनों के पश्चात वह हीदिक गे कोसे, दोदिक गे कोसे (ऐसा स्थल जहां ताम मिलता है) पहुँच जाता है और फिर एक्केन अर्थात बाँस से निर्मित एक प्रकार की टोकड़ी में भर-भर कर दोका गासे-मुर गासे (ताम) के फलों को भर लेता है और झूमते हुए वापस अपने घर को लौट जाता है।

कई दिनों के बाद दिदुकुब घर पहुँच जाता है और अगले ही दिन वह नदी के किनारे बैठकर बड़े-बड़े पत्थरों के बीच ताम को पीसता है और उस नदी में डालता जाता है जहां जाईबोने और बिरतापू दोनों रहते हैं। कुछ क्षणों के बाद आहिस्ता-आहिस्ता ताम का जहर रंग लाने लगता है और देखते-ही-देखते नदी में रहने वाली छोटी-बड़ी मछलियाँ छतपटाते हुये, धीरे-धीरे मरकर नदी के ऊपरी सतह पर तैरने लगती हैं। इसे देख दिदुकुब और अधिक उत्साह के साथ ताम को पिसते हुये मंत्रोच्चारण भी करने लगता है- जिस प्रकार रीब-तापो, हुदो-पेरो (छोटी मछलियाँ), पीप-कादा (बड़ी मछलियाँ) नदी के दोनों किनारों से छटपटाते-मरते हुए निकल रही हैं उसी तरह जाईबोने और बिरतापू भी तड़पे-छटपटाते और नदी की गहरी सतह के लेको यानी निचले भाग से

जाईबोने और लेदुम यानी ऊपरी सतह से बिरतापू दम तोड़ते हुए निकाल आए। कुछ घंटों के इंतज़ार के फलस्वरूप अचानक दिदुकुब खुशी से उछल पड़ा और चिल्ला उठा- आहा! अब आया न मज़ा। फिर वह समीप जा कर तसल्ली कर लेता है और जाईबोने एवं बिरतापू के मरे हुए शरीर को नदी के ऊपर तैरता देख खुशी से फूले नहीं समाता।

इस प्रकार आज भी गालो जनजाति या यों कहे कि गालो समाज में अगर कोई पुरुष किसी अन्य पुरुष की न्यीम अर्थात पत्नी या भावी पत्नी को भगा ले जाता है या उससे विवाह कर लेता है तो उसे अच्छा नहीं माना जाता है। भले ही जाईबोने और बिरतापू की तरह उसे ताम से नहीं मारा जा सकता है पर ऐसे लोगों को कोसा जाता है, बद्दुआ दी जाती है। इसलिए आज भी गाँव के बुजुर्ग एवं अनुभवी लोग हमें ऐसे कुकर्म करने से और ऐसे बद्दुवाओं से बचने की शिक्षा देते हैं।

(**संदर्भ:** स्थानीय न्यीबो (पुजारी) से वाद-संवाद के द्वारा)

(***लेखकीय परिचय:*** *गुमजुम लोई* शासकीय महाविद्यालय, बासार, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं।
मोबा: 9402047172, ई-मेल : gumjumloyi@gmail.com)